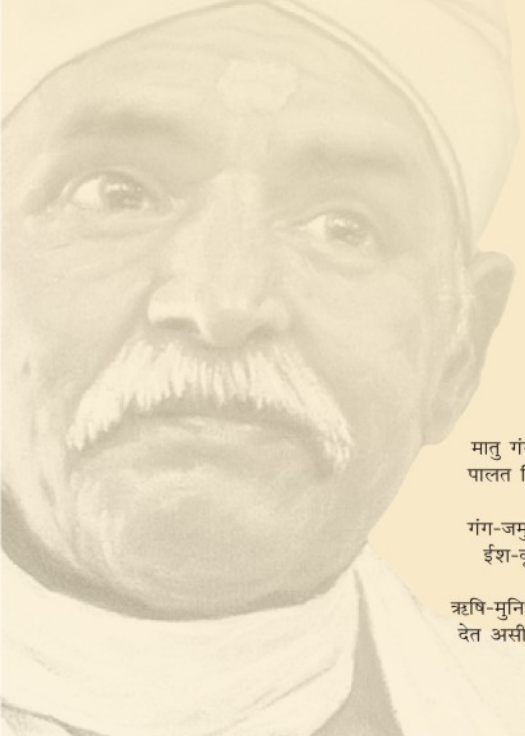

ॐ
जयतु विश्वविद्यालय काशी।
मातु गंग मय जाहि पियावत, मूलधर्म सुखराशी।
पालत विश्वनाथ विद्यागुरु, शंकर अज अविनाशी।
ज्ञान-विज्ञान-प्रकाशी।।
गंग-जमुन-संगम बिच देवी, गुप्त रही चपला सी।
ईश-कृपाते सोइ सरस्वती, वाराणसी प्रकाशी।
तिमिर-अज्ञान-विनाशी।।
ऋषि-मुनि संग नृप-मंडल सोहत उत्सव परम हुलासी।
देत असीस फलहु अरु फूलहू सब विध भारतवासी।
लहहु विद्याधन राशी।।

-महामना-विरचित

"सच्चा तप यह है कि अपने भाइयों के ताप से तपा जाय, सच्चा यज्ञ यह है कि जिसमें अपने स्वार्थ की आहुति दी जाय, सच्चा दान यह है कि परमार्थ किया जाय और सच्ची सेवा यह है कि उसके दुखी जीवों की सहायता की जाय। परमात्मा सबके हृदय में व्याप्त है। हम जितने प्राणियों को प्रसन्न कर सकेंगे उतने ही गुना हम ईश्वर को प्रसन्न करेंगे। **यह सच्चा धर्म देश भक्ति द्वारा प्राप्त है।** देश भक्ति का संचार हमारे हृदय से स्वार्थ को निकाल कर फेंक देगा। हम अदूरदर्शी, स्वार्थी और खुशामदियों की तरह ऐसे काम कदापि न करगें जिनसे देशवासियों को हानि पहुँचे। बल्कि असंख्य कष्ट उठाते हुये वही करेंगे जिसमें देश का भला हो, निर्धन-धनवान बनें, निर्बल बलवान हों और मूर्ख भी बुद्धिमान हो जायें। प्रत्येक प्रकार के सामाजिक दुःख मिटें, दुर्भिक्ष आदि विपत्तियाँ दूर होकर लाखों बिलबिलाती हुई आत्माओं को सुख पहुँचे। देश भक्ति द्वारा इतने धर्मों का संपादन होता हुआ देखकर भी यदि कोई धर्म के आगे देश भक्ति को कुछ नहीं समझता तो उस पुरुष को जान लिजिये कि वह धर्म के तत्व को नही पहचानता। वह धर्म-धर्म गा रहा है किन्तु यह नहीं समझता कि धर्म क्या वस्तु है?"

-महामना पं. मदन मोहन मालवीय

विश्वविद्यालय परिसर स्थित-श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर